International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(I), April - June, 2022, pp.131-135

कोरोना महामारी व इसके सामाजिक पर्यावरणीय प्रभाव

डॉ. नीरज कारगवाल*
डॉ. संजय कुमार मण्डावत**

सार

कोविड महामारी 21वी सदी की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। कोविड महामारी ने वैश्विक स्तर पर जीवन के हर क्षेत्र जैसे व्यावसायिक प्रतिष्ठान, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, धर्म, परिवहन, पर्यटन, रोजगार, मनोरंजन, खाद्य सुरक्षा, खेल आदि को प्रभावित किया है। पिछले दशकों के दौरान भारत में जहाँ आर्थिक उन्नति देखी गई तो वहीं समाज व पर्यावरण के प्रत्येक घटकों में नकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। कोविड महामारी ने तीव्र वृद्धि में रूकावट डालकर न केवल राष्ट्रीय स्तर बल्कि वैश्विक स्तर पर पर्यावरण के क्षेत्र में सकारात्मक पहल शुरू कर दी। यद्यपि भारत में कोविड से निपटने के लिए अनिवार्य निवारक उपाय शुरू किए गये हैं, लोगों को कोविड–19 से बचाने के लिए सामाजिक दूरी और अनिवार्य लॉकडाउन का पालन करवाया जा रहा है जिससे सामाजिक दूरी और सुरक्षा उपायों ने लोगों के बीच संबंधों और दूसरों के प्रति सहानुभूति की भावना को प्रभावित किया है। लॉकडाउन के कारण हमें गंभीर मुद्दों का सामना करना पड़ रहा है। विश्व की अर्थव्यवस्था मंदी के दौर में है और बेरोजगारी दर तेजी से बढ़ रही है। ये मुद्दे लॉकडाउन के नकारात्मक पहलुओं को दर्शाते हैं, लेकिन वास्तव में हम इसके सकारात्मक पहलुओं की भी उपेक्षा नहीं कर सकते हैं। पर्यावरण प्रदूषण में कमी लॉकडाउन का एक प्रमुख सकारात्मक पक्ष प्रतीत होता है। इस लेख में हम इन दो पहलुओं के बारे में विस्तार से बताने जा रहे हैं, जो वर्तमान स्थिति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। मानव जीवन को बचाने के लिए आर्थिक गतिविधियों को बंद कर दिया गया है। फलस्वरूप यह महामारी गंभीर जनसांख्यिकीय परिवर्तन और बेरोजगारी का कारण बनी और परिवहन और यात्रा उद्योग सबसे बुरी तरह प्रभावित हुए हैं क्योंकि हाल के महीनों में वैश्विक पर्यटन लगभग शून्य हो गया है। यद्यपि प्रतिबंधित आर्थिक गतिविधियों ने सामाजिक क्षेत्र एवं स्वच्छ पर्यावरण की दिशा में सकारात्मक योगदान दिया है। कोरोना काल में जो सामाजिक एवं पर्यावरणीय क्षेत्र में सकारत्मक परिवर्तन हुए है वो स्थायी नहीं हैं और भविष्य में इन क्षेत्रों में फिर से स्थितियां असाधारण हो जायेंगी। इसी के साथ इस अध्ययन का उद्देश्य पर्यावरण और समाज पर कोविड–19 के प्रकोप के प्रभाव का व्यापक अध्ययन करना है।

शब्दकोश: *कोविड–19, लॉकडाउन, पर्यावरण प्रदूषण, सामाजिक दूरी, जनसांख्यिकीय परिवर्तन।*

प्रस्तावना

कोरोना वायरस विषाणुओं का एक समूह है जो स्तनधारियों और पक्षियों में रोग उत्पन्न करता है। इनके कारण गाय एवं सूअरों में अतिसार एवं मुर्गियों के श्वसन तंत्र में रोग उत्पन्न की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। यह विषाणु मानव के श्वसन तंत्र में भी संक्रमण पैदा करते हैं जो सर्दी जुकाम से लेकर मृत्यु तक का कारण बनती है। इनकी रोकथाम के टीके उपलब्ध हैं। उपचार की प्रक्रिया प्राणी की रोग–प्रतिरोधक क्षमता पर निर्भर करती है। यह विषाणु में एक अति सूक्ष्म एक कोशिकीय जीव है जो केवल जीवित कोशिकाओं में ही वंश वृद्धि करता है। यह विषाणु शरीर के बाहर मृतप्रायः रहता है किंतु शरीर के अंदर प्रवेश करते ही सक्रिय हो जाता है। सर्वप्रथम यह विषाणु मनुष्य के अंदर चीन के वुहान प्रांत से लगा और यह विषाणु चीन के वुहान प्रांत से शुरू

* सहायक आचार्य–भूगोल, राजकीय महाविद्यालय बीबीरानी, अलवर, राजस्थान।
** सहायक आचार्य–भूगोल, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, महुवा, राजस्थान।

होकर संपूर्ण विश्व में महामारी के रूप में फैल गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस बीमारी को महामारी घोषित कर दिया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस विषाणु का नाम COVID-19 रखा है जहां CO का अर्थ कोरोना, VI का अर्थ वायरस, D का अर्थ डीजीज और 19 का अर्थ वर्ष 2019 अर्थात इस वर्ष से बीमारी प्रारंभ हुई। कोरोना वायरस संक्रमण विश्व स्तर पर तेजी से फैला और घातक एवं भयावह रूप धारण कर लिया है किंतु कोवैक्सीन, कोविशिल्ड इत्यादि दवाइयों का बाजार में आ जाने से संक्रमण पर धीरे–धीरे अंकुश भी लगा है। यह विषाणु व्यक्ति में सर्दी, खांसी, जुकाम, बुखार, गले में खराश, शारीरिक थकान एवं अंत में श्वसन तंत्र को कमजोर कर देता है जिससे श्वसन क्रिया करने में तकलीफ महसूस होने लगती है। यह विषाणु एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में तीव्र गति से फैलता है। अतः इससे से बचने के लिए सोशल डिस्टेंसिंग का पालन किया जाना अति आवश्यक व अनिवार्य माना गया है। विश्व स्तर पर इस महामारी के टीके लगवाए जा रहे हैं किंतु टीके के सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव भविष्य के गर्भ में छुपे हुए हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

- भारत में कोरोना महामारी से सामाजिक संरचना में आए बदलाव का अध्ययन करना।
- कोविड–19 के कालक्रम में पर्यावरणीय परिवर्तनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- कोरोना महामारी के सामाजिक प्रभाव में सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का अध्यन करना।
- लॉकडाउन एवं सोशल डिस्टेंसिंग की अवधारणा का अध्ययन करना।

अनुसंधान क्रियाविधि

यह पत्र कोविड–19 व सामाजिक एवं पर्यावरणीय के प्रभावों पर अध्ययन के लिए विभिन्न पत्रिकाओं, शोध लेखों, वेबसाइटों, विभिन्न स्रोतों से प्रकाशित आंकड़ों से एकत्रित द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। इंटरनेट पर उपलब्ध इस विषय पर विभिन्न अध्ययनों का भी इस पत्र में उल्लेख किया गया है।

सामाजिक प्रभाव

कोरोना महामारी ने व्यक्ति के सामाजिक संबंधों में सामाजिक दूरी की प्रक्रिया को कम किया है। व्यक्तित्व एवं परिवारों में भावनात्मक संबंधों को और अधिक सशक्त किया है। कोरोना काल में संपूर्ण विश्व लॉकडाउन एवं सामाजिक दूरी के नियमों का कड़ाई से पालन कर रहा था जिससे मानव के अस्तित्व को बचाया जा सके। कोरोना काल में लोगों ने अपना अधिकांश समय अपने परिवार के साथ व्यतीत किया। इस महामारी ने एक बार पुनः पारिवारिक संरचना के पुरातन स्वरूप को जागृत कर दिया। कोरोना काल में परिवार और आजीविका में से एक को चुनना पड़ा। फलस्वरुप लोग अपने काम धंधा को छोड़कर शहरों से अपने मूल कस्बों और गांवों में वापस जाने के लिए मजबूर हो गए। इस संकट काल में दैनिक आजीविका अधिकांश लोगों के लिए जनता का मूल विषय बन गई। भारत में 471 मिलियन श्रमिक जनसंख्या है जिनमे से 30 मिलियन प्रवासी श्रमिक जनसंख्या है। इस महामारी ने बहुत बडी संख्या में लोगों का रोजगार छिन लिया। इसमें सबसे अधिक नुकसान चौराहों पर और सडक किनारे पर ठेला लगाने वाले गरीब परिवार को हुआ। प्रवासी मजदूर वर्ग बेरोजगारी से तंग आकर अपने जीवनयापन करने के लिए शहर से पैदल ही अपने मूल निवास लौट आया। कोरोना काल गरीब परिवारों के लिए एक आपदा बनकर आया। लॉकडाउन काल में मजदूर वर्ग का सबसे अधिक नुकसान हुआ क्योंकि जो दैनिक मजदूरी से अपने घर का पेट पालते थे लॉकडाउन में उनके लिए एक वक्त का भोजन प्राप्त करने में मुश्किल हुई। मजदूर भूखे पेट सोने को मजबूर थे।

कोरोना काल ने एक ओर तो पारिवारिक दूरियों को कम किया वहीं सामाजिक दूरी बढ़ा दी। इसके चलते शोकाकुल परिवारों में चंद रिश्तेदार ही आवश्यक रस्मों रिवाजों को निभा रहे थे। समाज में कोई किसी के घर सांत्वना देने भी नहीं जा पा रहा था। समाज के कई लोगों ने इस नए बदलाव को स्वीकारा। इस संकट को देखते हुए जैसे तैसे अपने अतिआवश्यक कार्यों को स्वयं के स्तर पर निपटायें। कोरोना की वजह से संवेदनहीनता में वृद्धि हुई है। संक्रमण के शिकार लोग स्वस्थ्य होने के बाद भी उपेक्षा के शिकार हो रहे है। लॉकडाउन से पहले हम सभी अपने रोजमर्रा के कामों में इतना व्यस्त रहते थे कि अपनों के लिए अपने परिवार

के लिए व बच्चों के लिए कभी समय ही नहीं निकाल पाते थे किंतु लॉकडाउन के दौरान बच्चों को अपने माता–पिता, दादा–दादी के साथ समय बिताने का अवसर मिला। लॉकडाउन से एक बार फिर संयुक्त परिवार प्रथा की अवधारणा को बल मिला। लोगों ने मन में एक बार फिर से यह एहसास पनपने लगा कि संयुक्त परिवारों में परेशानियों को घर के सदस्य आपस में बांट लेने से दुख कम हो जाता है जबकि एकल परिवारों में घर के मुखिया को ही परेशानियों का सामना करना पड़ता है। कामकाजी महिलाओं ने भी संयुक्त परिवारों में लॉकडाउन का भरपूर आनंद के साथ बिताया। इस दौरान जहां बच्चों ने धर्म, ध्यान और योग में रुचि दिखाई वहीं अपनी संस्कृति व दादा–दादी के साथ समय बिताने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ।

कोरोना काल से सामाजिक रीति–रिवाजों में भी बदलाव नजर आया। सरकार ने कोरोना वायरस महामारी के दिशा निर्देश जारी किए जिसमें विवाह समारोह व अंतिम संस्कारों में लोगों की संख्या को सीमित कर दिया। कोरोना काल में समाज के सभी लोग सामाजिक दूरी का पालन करते हुए एक दूसरे की मदद में जुट गए। श्रमिक जो अपने गांव की ओर पलायन कर रहे थे। उनके लिए लोगों ने रहने ही खाने–पीने की समुचित व्यवस्था की। लोगों ने आपसी भाईचारा व सहयोग से निर्धन, जरूरतमंद, असहाय एवं अस्पताल में भर्ती रोगियों के लिए यथासम्भव खाने पीने की व्यवस्था की। कोरोना काल में आम व्यक्ति तक संसाधनों को जुटाने के लिए दानदाताओं ने प्रधानमंत्री राहत कोष, मुख्यमंत्री राहत कोष और राष्ट्रीय आपदा राहत कोष में धनराशि दान की। इस विश्वस्तरीय महामारी के दौर में भी भारत ने वसुधैव कुटुंबकम की भावना को जीवित रखा। इस घड़ी में भारत ने अपनी राष्ट्रीय नीति के तहत दुनिया के दूसरे गरीब देशों को करोड़ों रुपए की निःशुल्क दवा भेजकर कोरोना से लड़ने में सहायता की।

पर्यावरणीय प्रभाव

कोरोना काल में लॉकडाउन का प्रभाव सकारात्मक दृष्टि से विश्व स्तर पर महसूस किया गया। इस दौरान पर्यावरण प्रदूषण में आई गिरावट का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ। विश्व स्तर पर हर साल करीब 70 लाख मौते वायु प्रदूषण के कारण होती है। यह देखा गया है कि कोरोना महामारी में मृत्यु उन शहरों में अधिक हुई जहां वायु प्रदूषण का प्रभाव अधिक हुआ है। कोरोना काल में हवा की गुणवत्ता के स्तर में विगत दशकों के आंकड़ों में विश्व स्तर पर किए जा रहे अन्तर्राष्ट्रीय, समझौतों व प्रयासों के बावजूद भी पर्यावरण की दशा में कोई सुधार नहीं हो पाया, जितना वैश्विक लॉकडाउन के कारण सुधार हुआ है। यदि लॉकडाउन से पहले की बात करें तो उस समय कारखानों से निकलने वाला कचरा जल में प्रवाहित कर दिया जाता था तथा परिवहन के साधनों से ध्वनि और वायु प्रदूषण हो रहा था। लॉकडाउन ने इन सभी से मुक्ति दिला दी। सभी उद्योग धंधे बंद कर दिए गए थे। लॉकडाउन के चलते आज हमें हिमालय की चोटियां दूर से ही साफ साफ दिखाई देने लगी। वायुमंडल में बड़े पैमाने पर सकारात्मक बदलाव देखने को मिला। यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के अनुसार भारत में नाइट्रस ऑक्साइड के स्तर में कमी देखी गई। वायुमंडल में इसके अधिक सांद्रता की मात्रा बच्चों व वयस्कों में दमा का कारण बनती है। इससे प्रतिवर्ष 15 हजार से अधिक मौतें होती है।

लॉकडाउन से पूर्व नदियों का जल प्रदूषित होने के कगार पर पहुंच गया था। वह लॉकडाउन की वजह से स्वच्छता की ओर अग्रसर होने लगा। तीर्थ यात्रियों की आवाजाही बंद होने से भी नदियों के धार्मिक अनुष्ठान वाले घाटों में भी जल की शुद्धता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। गंगा–यमुना नदी की साफ सफाई के लिए जहां केंद्र सरकार द्वारा हजारों करोड़ों रुपए विभिन्न योजनाओं में व्यय किये गए। वहीं लॉकडाउन के कारण गंगा यमुना नदी बिना किसी योजना के क्रियान्वयन के स्वयं ही स्वच्छ हो गई। इन नदियों के घाटों पर पानी की गुणवत्ता में लगभग 50 प्रतिशत तक सुधार हुआ है शहरों में होटल व रेस्टोरेंटो के बंद होने से उनसे फैलने वाले कचरे व गंदे पानी में गिरावट दर्ज की गई। लॉकडाउन से पूर्व वायुमंडल की ऊपरी आवरण में स्थित ओजोन परत के क्षरण में लगातार वृद्धि हो रही थी। लॉकडाउन के दौरान विश्व स्तर पर उद्योग धंधे बंद होने व वाहनों की आवाजाही पर रोक लगने से ओजोन परत के क्षरण में सुधार हुआ है। लॉकडाउन लगने से ऐसा लगने लगा मानो दुनिया कैद हो गई और जंगली जानवर स्वच्छन्द रूप से विचरण कर रहे हैं। वन्य प्राणियों का कई महानगरों और शहरों में उन्मुक्त विचरण करते देखा गया। लॉकडाउन में विश्व स्तर पर परिवहन

के साधनों के आगमन में भारी कमी दर्ज की गई। इससे कार्बन उत्सर्जन में 17 प्रतिशत तक की कमी आई। इन्हीं कारणों से अंतरिक्ष स्टेशन से चीन की लंबी दीवार को भी स्पष्ट होते देखा गया। दिल्ली की हवा में प्रदूषण की मात्रा में गिरावट दर्ज की गई। पंजाब से हिमालय की चोटिया एवं उस पर पड़ी हुई बर्फ स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी। कोविड–19 व उसके विविध घटकों ने लंबे समय तक लोगों को लॉकडाउन के दायरे में बांधकर रखा। इसके चलते प्रकृति में मनुष्य का दखल एकदम बंद हो गया। नतीजा यह निकलकर आया की प्रकृति खुलकर निखरकर अपने नैसर्गिक स्वरूप में सामने आई। इसका सकारात्मक प्रभाव मनुष्य पर ही नहीं बल्कि वनस्पति, जीव जंतु एवं पर्यावरण के विविध घटकों में देखा गया। लॉकडाउन के कारण देश में कल–कारखानों एवं गाड़ियों की आवाजाही बंद होने से वायु, जल एवं ध्वनि प्रदूषण में लगभग 50 प्रतिशत तक की कमी दर्ज की गई। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा द्वारा भारत की एरोसोल ऑप्टिकल डेप्थ कम हुई है जिसके कारण भारतीय उपमहाद्वीप का आकाश स्वच्छ हुआ है। वायु में घुलित अशुद्धियां तीन दशकों के निम्नतर स्तर पर देखी गई। लॉकडाउन में वायु प्रदूषण व जल प्रदूषण की तरह ध्वनि प्रदूषण में भी भारी कमी आई है।

कोरोना काल हमारी पृथ्वी के लिए विश्राम काल माना जा सकता है। विश्व स्तर पर लॉकडाउन लगाए जाने के कारण लगभग पूरी आबादी को जैसे घरों ने गोद ले लिया। सभी कॉमर्शियल इंडस्ट्रीज व ऑफिस बंद पड़ गए थे। सड़कें एकदम सुनी और वीरान लगने लगी सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक और शहरीकरण के सभी कार्य एकदम मानो ठप पड़ गए हो। इसका नतीजा यह हुआ कि न तो किसी फैक्ट्री से धुँआ निकल रहा था और न ही औद्योगिक क्षेत्रों से किसी जलस्रोत में गंदा पानी जा रहा था। न ही सड़कों पर शोर–शराबा और न ही कहीं पृथ्वी में खनन या ड्रिलिंग किया जा रहा था। कोरोना वायरस की अभी तक शत–प्रतिशत प्रभावी वैक्सीन नहीं आई है किन्तु कोरोना वायरस ने स्वयं पृथ्वी के लिए वैक्सीन का काम किया है। कोरोना काल में लॉकडाउन से स्थितियां असाधारण बन गई थी किंतु मनुष्य सदैव इस स्थिति में रहना नहीं चाहता। इससे जल, वायु, ध्वनि, ओजोन क्षरण, औद्योगिक गतिविधियों से होने वाले प्रदूषण में कमी आयी किंतु कोरोना काल में लगाया गया लॉकडाउन एक अल्पावधि थी। इसका अंत शीघ्र हो गया। वापस स्थितियां असाधारण से सामान्य होने लग गई। सडकें पूर्व की भांति व्यस्त हो गई। उद्योग धंधे वापस प्रारंभ हो गए। नदियां फिर से अपना रंग बदल रही है। पर्यटन के बढ़ने से इस प्राकृतिक एवं पुरातात्विक स्थल फिर से दूषित हो रहे है। सब कुछ लॉकडाउन से पहले की स्थिति में तब्दील हो गया है। पर्यावरण की समस्या वापस जस की तस एवं पूर्ववत होने लगी है।

विश्व में कोरोना की तीसरी लहर शुरू होने और ओमिक्रोन के बढ़ते संक्रमण के कारण फिर से लॉकडाउन की स्थिति बन गई है। इसके साथ ही विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चिकित्सा अवशिष्टों के बढ़ते कचरे के प्रति चिंता व्यक्त की है। जनवरी 2022 को डब्ल्यूएचओ की एक रिपोर्ट के अनुसार 87,000 टन पीपीई किट, 140 मिलियन से अधिक टेस्टिंग किट, 2600 टन गैर संक्रामक प्लास्टिक सहित अवशिष्ट, 7,31,000 लीटर रासायनिक अवशिष्ट कोविड–19 से निपटने के लिए इस्तेमाल किया गया। विश्व स्तर पर वैक्सीन की करोड़ों डोज लगाई गई है, जिससे सिरिंज, सुई और सुरक्षा बक्से आदि के रूप में 1,44,000 टन अतिरिक्त कचरा पैदा हुआ है। इसके अलावा लोगों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला डिस्पोजल मास्क भी इस्तेमाल के बाद कचरा बढ़ाता है। इस महामारी के कारण उत्पन्न हजारों टन अतिरिक्त चिकित्सा अपशिष्ट के कारण दुनिया भर के स्वास्थ्य अवशिष्ट प्रबंधन प्रणाली भारी दबाव में है। इनसे मानव जीवन और पर्यावरण को काफी खतरा है। अतः विश्वभर के स्वास्थ्य केंद्रों को चिकित्सा अपशिष्टों को बेहतर ढंग से संभालने एवं निस्तारण के लिए सभी स्थानों पर महत्वपूर्ण बदलाव की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

कोविड–19 के प्रकोप ने अल्पावधि में भारत की जल, वायु और जैव पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार किया और वैश्विक कार्बन उत्सर्जन की कमी में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह लाभकारी प्रभाव केवल लॉकडाउन के दौरान देखा गया। जैसे ही भारत के कुछ क्षेत्रों ने लॉकडाउन हटाया वहां औधोगिक गतिविधियाँ फिर से शुरू हो गई, लोगों और परिवहन का बड़े पैमाने पर आवागमन शुरू हो गया और स्थितियां पहले जैसी हो गई। अतः

इस महामारी को पर्यावरण में बदलाव के तौर पर नहीं देखा जाना चाहिए। लॉकडाउन में सब कुछ बंद था जिससे कार्बन उत्सर्जन में गिरावट दर्ज की गई थी। कोविड–19 और उससे जुड़े लॉकडाउन ने हमें पीछे हटने का दुर्लभ अवसर दिया है। स्वच्छ हवा, पानी और रहने योग्य शहरों की हमने इतने लंबे समय से मांग की। वे शहर अब स्वच्छ है क्योंकि हमें बंद कर दिया गया था। इस प्रकार, इससे पहले कि हम हमेशा की तरह जीवन फिर से शुरू करें। हमें सिद्धांतों को स्थापित करने के लिए प्रतिबद्धता बनानी चाहिए। हम सामाजिक व्यवहार, जीवन शैली और सार्वजनिक नीति निर्माण में सतत विकास के प्रति समर्पित हों एवं हमारे पर्यावरण को स्वच्छ और टिकाऊ बनाएं। लॉकडाउन में जो पर्यावरण के प्रति सकारात्मक बदलाव हुए उन्हें निरंतर बनाए रखने के लिए केंद्र व राज्य सरकार एवं सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं को आगे आना होगा। ऐसे उपाय किए जाने चाहिए जिससे अपनी दिनचर्या या रोजगार के लिए कम से कम सड़क पर आना पड़े। विकसित व विकासशील देशों में जो काम लोग घरों में बैठे–बैठे ऑनलाइन (वर्क फ्रॉम होम) निपटा देते हैं। उसी काम को करने के लिए भारत में सरकारी दफ्तरों, बैंको, मेडिकल स्टोरों, फल सब्जी और राशन की दुकानों इत्यादि के लिए चक्कर लगाने पड़ते हैं। इसमें समय, श्रम व धन तीनों की बर्बादी होती है। कोरोना ने हमें यह अवसर प्रदान किया है कि स्थानीय और वैश्विक स्तर पर अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण की राजनीति को पारिस्थितिकी, समानता और न्याय की तर्ज पर रखते हुए, इसे फिर से परिभाषित किया जाए। हमें पर्यावरण से जुड़े कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के साथ व्यक्तिगत, कानूनी व प्रबंधकीय स्तर पर संगठित प्रयासों, पारदर्शी नवाचारों, जवाबदेही और मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति के सहारे ही इस विकट संकट से उबरने में हम कामयाब हो सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Aneja, Ranjan and Ahuja, Vaishali; Oct 14, 2020; An assessment of socioeconomic impact of COVID-19 pandemic in India
2. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC7646007/
3. CPCB. Central Pollution Control Board, Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Government of India; 2020. Daily River Water Quality Monitoring Data.
4. Environmental and Social Management Framework for India COVID-19 Emergency Response and Health Systems Preparedness Project; August 2020; Ministry of Health and Family Welfare Government of India.
5. Impact of lockdown on air quality, CPCB, M/o Environment, Forest and Climate Change, Govt. of India.
6. http://www.indiaenvironmentportal.org.in/files/file/Impact-Of-Lockdown-On-AirQuality.pdf
7. Kumar, V.; Alshazly, H.; Idris, S.A.; Bourouis, S. Impact of COVID-19 on Society, Environment, Economy and Education. 10 December 2021
8. https://doi.org/10.3390/ su132413642
9. Mofijur, M., Fattah, I.M. R., Alam, Md Asraful , Saiful Islam, A.B.M., Ong, Hwai Chyuan, Rahman, S.M. Ashrafur, Najafi, G., Ahmed, S.F., Alhaz Uddin, Md., and Mahlia, T.M.I.; Oct 14, 2020; Impact of COVID-19 on the social, economic, environmental and energy domains: Lessons learnt from a global pandemic. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC7556229/
10. The COVID-19 Pandemic Has Changed Education Forever. This Is How. 2021. https://www.weforum.org/agenda/2020/04/coronavirus-education-global-covid19-online digital-learning/ (accessed on 16 October 2021).
11. The Indian Express, dated 08 May, 2020.
12. https://indianexpress.com/article/opinion/web-edits/rediscovering-sustainabledevelopment-through-a-covid-19-lockdown-lens-6399986/
13. Website of World Health Organisation.
14. https://www.who.int/emergencies/diseases/novel-coronavirus-2019

❖◆❖